श्री विमलनाथ जिन पूजन

स्थापना

(चौपाई)

विमलनाथ प्रभु दर पर आया, श्री चरणों में शीश झुकाया।
जब से भगवन् दर्शन पाया, और न कोई मन को भाया।।1।।
काल अनंता व्यर्थ बिताया, आतम को पहचान न पाया।
पर को जान, मान ही आया, मन मंदिर में नहीं बिठाया।।2।।
क्षमा कीजिए हे सुखधामी, हृदय वेदी पर आओ स्वामी।
भक्ति भाव का चौक पुराया, श्रद्धा थाल सजाकर लाया।।3।।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छंद)

प्रमातम आनंद सरोवर, भावों से जल अपिर्तत है।
रत्नत्रय की मुक्ता चुगता, मानस हंसा प्रमुदित है।
सम्यग्दर्शन कलश कनकमय, ज्ञान नीर को ले आऊँ।
जन्म मरण के नाश हेतु श्री, विमलप्रभु के गुण गाऊँ ।।1।।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्दाय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
हे प्रभुवर तुम शांत सौम्य हो, शीतल चंदन ले आया।
क्रोधानल से दूर रहूँ मैं, अतः शरण में हूँ आया।।
तप्त हो रहा भवाताप से, समता रस का पान करूँ।
गुण अनंत मय चंदन पाने, आत्म तत्त्व का ध्यान धरूँ ।।2।।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्दाय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
जान नहीं पाते अक्षर से, अक्ष अगोचर जिनवर हैं।
ज्ञान परोक्ष प्रभु जी मेरा, ध्याऊँ कैसे जिनवर मैं।।
आत्म शक्ति के द्वारा फिर भी, जिन पद का सम्मान करूँ।
इंद्रिय सुख क्षणभंगुर सारा, शाश्वत सुख का पान करूँ ।।3।।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्दाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
तन की ही परिणति को मैंने, अब तक माना धर्म प्रभो।
शुद्धातम के भाव न जागे, बना रहा अनजान प्रभो।।
गुण अनंत मय पुष्प खिले हैं, हे जिनवर तव उपवन में।
कभी नही मुरझाने वाले, महके ज्ञान सरोवर में।।4।।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्दाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
क्षुधा तृषा से रहित जिनेश्वर, दोष अठारह रहित रहें।
आनंद रव नैवेद्य अनुपम, पाकर निज में लीन रहें।।
विषय भोग की चाह नहीं हैं, हे जिनवर मेरे मन में ।
अनाहारी विमलेश्वर प्रभु को, धारूँ मैं अपने मन में।।5।।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्दाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
काल अनादि ज्ञान स्वरूपी, निजानंद को पा न सका।
तत्त्व ज्ञान की अद्भुत महिमा, नहीं इसे पहचान सका।।
आत्म ज्ञान का दीप जलाकर, पूजा मेरी सफल करो।
असंख्यात आतम प्रदेश के, दीपों में प्रभु तेल भरो।।6।।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्दायमोहांधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वेष भाव भी नहीं आपके, राग अंश का नाम नहीं।
ध्यानाग्नि प्रगटी है ऐसी, जला दिये हैं कर्म सभी।।
आत्म विशुद्धि अनुपम ऐसी, भाव सुगंधी फैल रही।
सिद्धक्षेत्र तक जा पहुँची है, पथ दिखला दो हमें वहीं।।।7।।
ऊँ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्दाय अष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
सुखी-दुखी मैं हुआ आज तक, कर्म फलों का वेदन कर।
स्वानुभूति मय अमृत फल को, चखा नहीं अब तक जिनवर।।
मोक्ष महाफल शीघ्र मिलेगा, मुझको ये विश्वास प्रभो।
सम्यक् मूल चरित्र वृक्ष पर, शिवफल पाना आश प्रभो।।8।।
ऊँ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्दाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
मैं पर का नहीं कर्ता होता, पर भी मेरा क्या करता।
निमित्त भाव से कर सकता पर, उपादान से क्या करता।।
पुण्योदय से आप कृपा से, भास रहा है आत्म स्वरूप।
पा जाऊँ अब निज प्रभुता को, छूट जाए यह भव दुःख कूप ।।..9।।
ऊँ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्दायअनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(सखी छंद)

वदी ज्येष्ठ दशमी आई, माँ जयश्यामा हरषाई ।
तजकर शतार जिन आये, कंपिला देव सजवाये।।
पद्रह महिने तक बरसे, बहुमूल्य रतन नभगण से।
सब जन-जन मंगल गाये, हम गर्भ कल्याण मनाये।।1।।
ऊँ हीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्दायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु जन्म पुनः नहीं धारे, नृप कृतवर्मा सुत प्यारे।
जिन पांडु शिला पर लाये, इंद्रों ने न्हवन कराये।।
सुद माघ चौथ थी प्यारी, सुरपति शचि भी हरषाई।
शचि जन्मोत्सव मनाये, एक भव में मुक्ति पाये ।2।।
ऊँ हीं माघशुक्लचतुथ्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्दाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जब मेघ नाश को देखा, सब छोड़ दिया जग लेखा।
लौकांतिक विभु गुण गाया, तप दुद्धर विभु मन भाया।।
पालकी देवदत्ता थी, उद्यान सहेतुक पहुँची।
तप कल्याणक सुखदाई, जय विमलनाथ जिनराई ।।3।।
ऊँ हींमाघशुक्लचर्तुथ्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्दाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
त्रय वर्ष रहे छद्मस्था, प्रभु मौन रहे निज स्वस्था।
वदि माघ सु षष्ठी आई, प्रभु केवलज्ञान उपाई।।
पहले पाटल तरु नीचे, फिर अधर गगन में पहुँचे।
जय विमलनाथ क्षेमंकर, जय त्रयोदशम् तीर्थंकर।।4।।
ऊँ हीं माघकृष्णषष्ठयां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्दाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शुभ कृष्ण अष्टमी आई, आषाढ़ मास सुखदाई।
गिरि कुट सुवीर शिखर से, शिवनार वरी गिरिवर से।।
प्रभु आठों करम नशाये, और निजानंद पद पाये।
हम मोक्ष कल्याण मनाये, कब पास आपके आये।।5।।
ऊँ हीं आषाढ़कृष्णाअष्टम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्दाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य

ऊँ हीं अर्हं श्रीविमलनाथजिनेन्दाय नमो नमः।

जयमाला

(चौपाई)

विमलनाथ जिन भवभय हारी, ज्ञान मूर्ति शिशु सम अविकारी।
परम दिगंबर मुद्रा धारी, शरणागत को मंगलकारी।।1।।
तेरहवें तीर्थंकर स्वामी, दयामूर्ति समता अभिरामी
तेरह विध चारित्र बताया, दिव्यध्वनि में ज्ञान कराया।।2।।
पाँच महाव्रत पाँच समितियाँ, तीन गुप्ति पाले दिन रतियाँ।
निश्चय पंच महाव्रत धारी, पाता शिवपद अतिशय कारी।।3।।
हिंसा झूठ परिग्रह सारे, कुशील चोरी पाप निवारे।
पूर्ण रूप से इनको त्यागे, सम्भ्यग्दर्शन युत अनुरागे।।4।।
मिथ्यादर्शन जब तक रहता, शून्य सभी हो चारित चर्या।
मिथ्यातम है पहले जाता, फिर संयम है क्रम से आता।।।5।।
ईर्या भाषैषणा समिती, निक्षेपण आदान सुनीती।
प्रतिष्ठापन ये पाँच समिती, मुनी जनों को इनसे प्रीती।।6।।
बिन विवेक है क्रिया अधूरी, मोक्षमहल से रहती दूरी।
जब तक है मिथ्यात्व वासना, समिति का है नाम लेश ना।।7।।
वचन गुप्ति मनो गुप्ति पाले, काय गुप्ति धारे ीाव टाले।
मन वच तन जो संयम धारे, योगों की दुष्प्रवृत्ति निवारे।।8।।
तीर्थ प्रवर्तक आप कहाये, आतम हित चारित्र बताये।
गुरू कृपा से जागे शक्ती, प्रभु चरणों की कर लूँ भक्ती।।9।।
दुर्भावों को दूर भगाऊँ, सोयी आतम शक्ती जगाऊँ।
नाथ आपका पथ अनुगामी, बन जाऊँ मैं शिवपथ गामी।।10।।

दोहा

पूजा विमल जिनेश की, भक्ति भरी जयमाल।
अल्पमति मम‘पूर्ण’ हो, गाऊँ तव गुणमाल।।11।।

ऊँ हीं श्रीविमलनाथजिनेन्दाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

जय जय विमलेश्वर, हे अखिलेश्वर, भव-भव का संताप हरो।
निज पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, ‘विद्यासागर पूर्ण’ करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।